सांख्यकारिका के अनुसार तत्त्वविवेचन

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

सांख्य तत्त्वप्रधान दर्शन है। सांख्यदर्शन में कुल पच्चीस तत्त्व स्वीकार किए गए हैं जिसे निम्न कारिका के माध्यम से स्पष्ट किया गया है-

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।

षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।।

अर्थात् मूल प्रकृति किसी का विकार नहीं, महत् इत्यादि सात प्रकृति (कारण) और विकृति (कार्य) दोनों ही हैं। 16 तत्त्वों का समूह तो केवल विकार (कार्य) है तथा पुरुष न ही प्रकृति (कारण) है और न ही विकृति (कार्य)।

सांख्यसूत्र के अनुसार सत्त्व, रज तथा तम इन तीनों गुणों की साम्यावस्था प्रकृति है।इसमें रजोगुण क्रियाशील है, किन्तु तमोगुण तो अवरोध-रूप में इस 'प्रकृति' को कार्य उत्पन्न करने में बाधा देता है। परन्तु पूर्व-पूर्व जन्मों के कर्मों का फलस्वरूप अदृष्ट तो जीवों के साथ अदृष्ट तो जीवों के साथ रहता ही है। वे अदृष्ट जब पाकोन्मुख होते हैं, अर्थात् पुनः संसार में आकर जीव को सुख-दुःखादि के रूप में भोग देने में क्षोभ उत्पन्न होता है। पश्चात् प्रकृति का अवरोध हट जाता है और और रजो गुण के रहने के कारण स्वतः परिणामिनी वह मूला प्रकृति अव्यक्त रूपों को 'महत्', 'अहंकार' आदि व्यक्त तत्त्वों के रूप में प्रकाशित करती है।

प्रकृति के सात्त्विक अंश से 'महत् तत्त्व' जिसे 'बुद्धितत्त्व' भी कहते हैं, की अभिव्यक्ति होती है इसीलिए महत् को प्रकृति की विकृति कहते हैं। महत् में भी सत्त्व, रजस् और तमस् हैं। किन्तु इसमें प्राधान्य है 'सत्त्व' का। बुद्धि अध्यवसायात्मक है अर्थात् किसी कार्य के करने में जो निश्चय किया जाता है कि 'यह कार्य हम अवश्य करेंगे', वह बुद्धि का स्वरूप है। रजो गुण के कारण बुद्धि भी चल है, अतएव इसका भी परिणाम

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

होता है। उस समय विकृति होते हुए भी बुद्धि प्रकृति होकर भी अहंकार को उत्पन्न करती है। अतएव 'बुद्धि' प्रकृति-विकृति है।

बुद्धि में भी सत्त्व, रजस् और तमस् ये तीनों गुण हैं। सत्त्व प्रधान है, अन्य गुण गौण हैं। प्रतिक्षण परिणाम होने के कारण 'बुद्धि' तत्त्व से परिणाम के द्वारा 'अहंकार' तत्त्व बन जाता है। बुद्धितत्त्व में रहने वाले रजोगुण से अहंकार उत्पन्न होता है। इसमें रजोगुण का प्राधान्य है। अहंकार बुद्धि की विकृति है, परन्तु इससे जब दूसरा तत्त्व उत्पन्न होता है, उस समय 'अहंकार' भी 'प्रकृति' का धर्म धारण कर लेता है। यह भी गुणों का स्वभाव है। अतएव अहंकार भी प्रकृति-विकृति है।

अहंकार अभिमानात्मक है। इसमें भी तीनों गुणों के मिलने के कारण इसके तीन रूप हैं-

वैकृत-इसमें 'सात्त्विक गुण' विशेष है। इससे ग्यारह इन्द्रियों की अभिव्यक्ति होती है।

भूतादि-इसमें तमोगुण का वैशिष्ट्य है। इससे पाँच तन्मात्राओं की अभिव्यक्ति होती है।

तैजस-इसमें रजोगुण की विशेषता है। 'तैजसरूप अहंकार' सात्त्विक तथा तामस इन दोनों अंशों को अपने-अपने कार्य करने में सहायता देता है।

इन अंशों से युक्त अहंकार से ग्यारह इन्द्रियों की अर्थात् मनस्, पाँच ज्ञानेन्द्रियों की तथा पाँच कर्मेन्द्रियों की अभिव्यक्ति होती है, किन्तु इन्हीं गुणों के अवान्तर तारतम्य से इन ग्यारहों में भी अन्तर है। ये ग्यारह केवल 'विकृति' हैं। ये कभी भी 'प्रकृति' का रूप नहीं धारण करती हैं। इनसे कोई अन्य तत्त्व अभिव्यक्त नहीं होता। चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रसना तथा त्वक् ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। इनके विषय क्रमशः रूप, शब्द, गन्ध, रस तथा स्पर्श हैं। वाक्, पाणि, पाद, पायु तथा उपस्थ-ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। इनके विषय क्रमशः वचन (वर्णोच्चारण), आदान, विहरण, उत्सर्ग (मलत्याग) तथा लौकिक आनन्द है। इनमें से ज्ञानेन्द्रिय के साथ कार्य करने के समय 'मन' ज्ञानेन्द्रिय के समान रूप का तथा कर्मेन्द्रिय के साथ कर्मेन्द्रिय स्वरूप का हो जाता है।

'अहंकार' के तामस अंश से शब्दतन्मात्रा, स्पर्शतन्मात्रा, रूपतन्मात्रा, रसतन्मात्रा तथा गन्धतन्मात्रा ये पाँच तन्मात्राएं अभिव्यक्त होती हैं। ये सभी तामसिक स्वरूप के हैं। ये अहंकार से उत्पन्न होने के कारण स्वयं 'विकृति' हैं, किन्तु पश्चात् आकाश आदि स्थूल तत्त्वों को उत्पन्न करने के कारण 'प्रकृति' भी है। इसीलिए ये पाँच 'प्रकृति-विकृति' हैं।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

शब्दतन्मात्रा आदि पाँच पृथक्-पृथक् अहंकार से उत्पन्न हुए हैं। इस परिणाम की प्रक्रिया में यद्यपि ये पाँच अहंकार से उत्पन्न हुए हैं, अहंकार का तामस रूप इन पाँचों में समान रूप से पृथक् पृथक् वर्तमान है, फिर भी ये परस्पर मिले हुए नहीं हैं। अतएव इनसे जो आगे सृष्टि होगी, वह स्वतन्त्र रूप में पृथक्-पृथक् होगी। अर्थात् 'शब्दतन्मात्रा' से 'आकाश', 'स्पर्शतन्मात्रा' से 'वायु', 'रूपतन्मात्रा' से 'तेजस्', 'रसतन्मात्रा' से 'जल' तथा 'गन्धतन्मात्रा' से पृथिवी पृथक्-पृथक् अभिव्यक्त होते हैं। यही पाँच भूतों की सृष्टि है। ये भूत सांख्यमत में स्थूलतम पदार्थ है। इन्हें 'महाभूत' भी कहते हैं। ये विकृतिमात्र हैं।

उपर्युक्त सारे विवरण को सारणी के रूप में इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है-

स्वरूप	**तत्त्व**	**संख्या**
केवल प्रकृति	प्रकृति	1
प्रकृति-विकृति	महत्, अहंकार, शब्द, रूप, रस, स्पर्श, गन्ध — पञ्चतन्मात्राएं	7
केवल विकृति	मन पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ- चक्षु, घ्राण, रसना, श्रोत्र एवं त्वक् पञ्च कर्मेन्द्रियाँ- वाक्, पाणि, पाद, पायु एवं उपस्थ पञ्च महाभूत- आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी	16
न प्रकृति न विकृति	पुरुष	1

Dhananjay Vasudeo Dwivedi